'पाँच आँगनों वाला घर'में पारिवारिक विघटन

मुख्त्यार सिंह

ग्रा. व पो. शहरीमदन गढ़ी,
तह. कोल, जि. अलीगढ़
(उप्र.)-202123
मो. 08923758838

> बरगद के पेड़ की तरफही घर का मुख्य दरवाजा था। वहाँ से पिछवाड़े तक फैला लम्बा-चौड़ा घर, पाँच आँगनों वाला। कमरों की तो गिनती ही नहीं थी। मुख्य दरवाजे से सटा बैठकखाना था- राजन के पिता का कमरा.... वकालत का दफ़्तर और उनकी बैठकबाजी के लिए भी। बैठकखाने के पीछे घर का सबसे बड़ा आँगन था जिसे गणेश जी वाला आँगन कहते थे। यहाँ मर्दों वाले कार्यक्रम होते-मुशायरा, कवि सम्मेलन, मुजरा वगैरह। छोटी बैठकी हुई थी तो बैठकखाने में ही हो जाती।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। परिवार किसी भी समाज की एक प्राथमिक इकाई है। आदिम समाज से लेकर वर्तमान समाज में परिवार के अस्तित्व एवं महत्त्व को स्वीकार किया गया है। परिवार सामाजिक संगठन की एक मौलिक इकाई है। परिवार शब्द की उत्पत्ति- ''लैटिन भाषा के 'फेमुलस' शब्द से हुई है। इस फेमुलस शब्द से एक ऐसे समूह का बोध होता है जिसके अन्तर्गत माता-पिता, बच्चे, नौकर और दास आते हैं।''[1] परिवार के अर्थ के सम्बन्ध में विद्वान एकमत नहीं है। कुछ समाजशास्त्री परिवार में पति-पत्नी तथा अविवाहित बच्चों को शामिल करने की दलील देते हैं। इसके विपरीत कुछ समाजशास्त्री परिवार में पति-पत्नी, बच्चों एवं दादा-दादी आदि को सम्मिलित करते हैं। परिवार की अनेक विद्वानों ने भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ देकर उसके स्वरूप पर प्रकाश डाला है। समाजशास्त्री मेकाइवर एवं पेज के अनुसार- ''परिवार एक ऐसा समूह है जिसमें यौन सम्बन्ध पाये जाते हैं। जिसका आकार छोटा हो और जो बच्चों का प्रजनन और लालन-पालन करे।''[2]

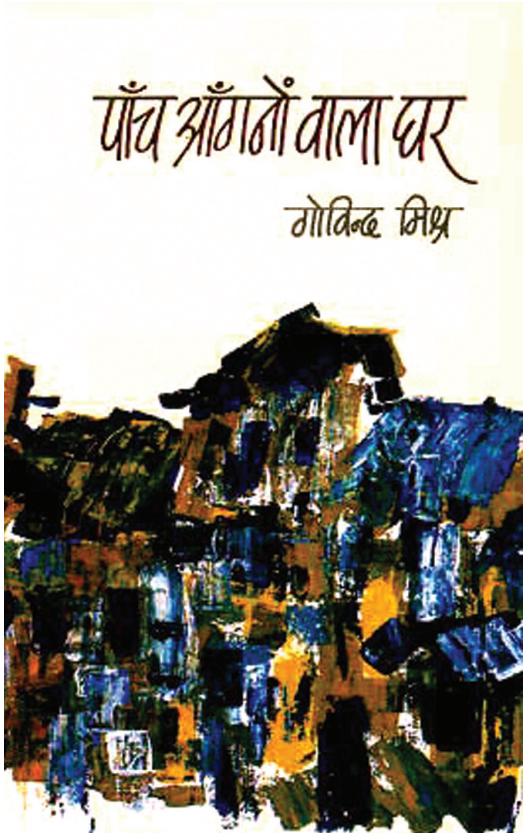

'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास में चित्रित परिवार एक समूह का बोध कराता है जिसके अन्तर्गत माता-पिता, बच्चे ही नहीं, पूरा कुनबा रहता है जो कि तीन पीढ़ियों को एक ही चाहरदीवारी में निभाये हुए है। उपन्यास के प्रारम्भ में ही गोविन्द मिश्र उस परिवार का ऐसा चित्र बनाते हैं- ''राजन.... मुंशी राधेलाल एडवोकेट और श्रीमती शान्तिदेवी का दूसरे नम्बर का लड़का। राजन के दो भाई और एक बहन। उस लम्बे-चौड़े घर में राजन के चचेरे भाई-बहन और उनके परिवार भी रहते थे। खेलकूद के लिए बाहर जाने की जरूरत नहीं होती, घर में ही इतनी भीड़-भाड़ थी।'' ये सगोत्र तथा रक्त सम्बन्ध वाले सदस्य एक साथ रहते ही नहीं, एक साथ खेलते भी हैं। यहाँ जीवन इतना सरल बीतता है कि बचपन से